International Journal of Applied Research 2022; 8(7): 240-244

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(7): 240-244
www.allresearchjournal.com
Received: 17-04-2022
Accepted: 05-06-2022

रुचि सिंह
शोध छात्रा, समाजशास्त्र,
शासकीय ठा. रणमत सिंह
महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश,
भारत

डॉ. केके सिंह
सेवानिवृत्त प्राध्यापक, समाजशास्त्र,
शासकीय ठा. रणमत सिंह
महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश,
भारत

Corresponding Author:
रुचि सिंह
शोध छात्रा, समाजशास्त्र,
शासकीय ठा. रणमत सिंह
महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश,
भारत

रीवा जिले में संचारक्रांति से घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रुचि सिंह, डॉ. केके सिंह

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा रीवा जिले में संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित सभी विकासखण्डों से 100–100 महिलाओं से कुल 900 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। प्रस्तुत शोध में आकंड़ो के संकलन हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का निर्माण किया गया है। सूचना क्रांति से महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर जहां एक ओर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तो वहीं दूसरी ओर इसका नकारात्मक प्रभाव एवं इनमें सामाजिक विघटन भी देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव के कारण समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की गति तीव्र हुई है, वहीं नकारात्मक प्रभाव के कारण इनके समाज में कई समस्या उत्पन्न हो गई है। शोध क्षेत्र में 10.22 प्रतिशत लोग असहमत थे कि सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है। इसी संदर्भ में 34.11 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 55. 67 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है। वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है।

कूटशब्द : रीवा जिला, संचारक्रांति, घरेलू महिला, राजनैतिक, आर्थिक, महत्वकांक्षा

1. प्रस्तावना
यह प्राचीन काल से ही चली आ रही है, जिससे प्राचीन साहित्य में हमें विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों की जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन किवदंतियां है कि प्राचीन समय में संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए कबूतर माध्यम हुआ करता था। उसी प्रकार संचार के माध्यम के परिणामस्वरूप प्राचीन काल में राजा महाराजा राजदूतों के माध्यम से अपना संदेश, लेकिन वो मौखिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर बेचते थे। इसके बाद पत्रव्यवहार के माध्यम से संचार होता था। लेकिन अंग्रेजी शासनकाल के समय सन अठारह सौ तिरेपन में एक पृथक से डाक विभाग का गठन किया गया। संचार के विकास के काम में इसके स्वरूप में तेजी से बदलाव आया है। पिछले कुछ दशकों में संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। संचार अब लिखित मौखिक रूप से इलेक्ट्रानिक स्वरूप में पहुंच चुका है। आज समाज में संचार माध्यमों द्वारा आमूलचूल परिवर्तन हुआ है तो समाज में संचार के माध्यम से सामाजिक संरचना व्यवस्था स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। क्या और सामाजिक क्षेत्र में भूमिका परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है? सामाजिक संरचना आपने आदिकाल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुंची है तो सामाजिक संरचना में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई संचार क्रांति रहे, जो परिवर्तन किए उससे सामाजिक संरचना का स्वरूप ही बदल गया, जिसमें रेडियो, टीवी, दूरदर्शन आदि ने समाज को जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। मध्यप्रदेश के इंदौर में भी एक आईटीपार्क को स्थापित किया गया है जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित कार्य किया जा रहा है। इन सब का प्रत्यक्ष प्रभाव महिलाओं की सामाजिक स्तर पर पड़ा है। संचार क्रांति ने इस तरह शिक्षा को नए आयाम प्रदान किए हैं जिससे बहुत घर से ही अपनी शिक्षा को पूर्ण कर आत्मनिर्भर बन सकती है। ऐसी संदर्भ में स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि एक स्त्री के शिक्षित होने से पूरा परिवार शिक्षित होता है तथा पूरा परिवार शिक्षित होने से पूरा राष्ट्र शिक्षित होता है। संचार क्रांति ने समाज के हर क्षेत्र पर अपना प्रभाव दिखाया है जिससे समाज के नियम तथा व्यवस्था में परिवर्तन हुआ है और वहाँ परिवार, नातेदारी में परिवर्तन हुआ है। जातिगत बंधन ढीले हुए हैं। संचार के माध्यम से समाज की भागीदारी भी बडी है। समाज में संचार साधनों को एक ही पहलू पर दृष्टि बात कर उसका आकलन किया जाना उचित नहीं होगा।

संचार का दूसरा पहलू समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है जिससे समाज द्वारा तीव्र गति से पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण किया जा रहा है जिससे कहीं ना कहीं सामाजिक संस्कृति भी प्रभावित हुई है। कहीं ना कहीं पाश्चात्य जीवन शैली परिवार के विघटन का कारण भी बनी है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

इंटरनेट से भारतीय महिलाओं का सशक्तीकरण बढ़ा है और उनकी जानकारी तक पहुँच बनी है। वे दिन–प्रतिदिन के जीवन के बारे में सही और व्यापक परिप्रेक्ष्य में निर्णय ले पा रही हैं। इंटरनेट पर सोशल मीडिया का भी महिलाएँ खुलकर इस्तेमाल कर रही हैं। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो सामाजिक क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है।
2. वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग के कारण अपने घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है।

4. उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

- सूचना प्रौद्योगिकी से महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति की स्थिति का अध्ययन करना।
- वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग के कारण अपने घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा की कमी आ रही है कि स्थिति का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

5.1 भौगोलिक परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत सभी विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमन – अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

6. शोध विधियाँ :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र में समन्वित संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में महिलाओं से वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

7. न्यादर्श चयन :

रीवा जिला में संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित सभी विकासखण्डों से 100–100 महिलाओं से कुल 900 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने संचारक्रांति द्वारा घरेलू महिलाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक महत्वकांक्षाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – आशारानी व्होरा (2005)[1], आहूजा, राम, रावत प्रेम (2016)[2], ममता (2010)[3], जैन, मोहिनी एवं अर्सद मोहम्मद (2017)[4], शुक्ला, स्वाती (2012)[5], श्रीवास्तव, कामिनी (2010)[6], सिंह, रुचि एवं सिंह, डॉ. के.के. (2022)[7] एवं सिंह, पूजा एवं सिंह, डॉ. के.के. (2022)[8]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

रीवा जिला 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81. 2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति का अध्ययन

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्ष में चयनित महिलाओं की संख्या	सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है?					
			असहमत		थोड़ा सहमत		पूर्णतः सहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	100	10	10.00	44	44.00	46	46.00
2.	रायपुर कर्चुलियान	100	8	8.00	33	33.00	59	59.00
3.	गंगेव	100	11	11.00	38	38.00	51	51.00
4.	नईगढ़ी	100	7	7.00	34	34.00	59	59.00
5.	मऊगंज	100	5	5.00	30	30.00	65	65.00
6.	हनुमना	100	12	12.00	33	33.00	55	55.00

7.	त्योंथर	100	10	10.00	36	36.00	54	54.00
8.	जवां	100	13	13.00	29	29.00	58	58.00
9.	सिरमौर	100	16	16.00	30	30.00	54	54.00
योग		900	92	10.22	307	34.11	501	55.67

One-way ANOVA

Data Summary				
Gropups	**N**	**Mean**	**Std.Dev.**	**Std. Error**
असहमत	9	10.2222	3.3082	1.1027
थोड़ा सहमत	9	34.1111	4.7288	1.5763
पूर्णतः सहमत	9	55.6667	5.4314	1.8105
Annova Summary				
Sources	**Degree of freedom DF**	**Sum of Squares SS**	**Mean Squares MS**	**F**
Between groups	2	9301.578	4650.789	222.1508
Within groups	24	502.4467	20.9353	
Total	26	9804.0248		

The f-ratio value is 222.1508, The p-values is <.0001. The result is significant at p<0.05.

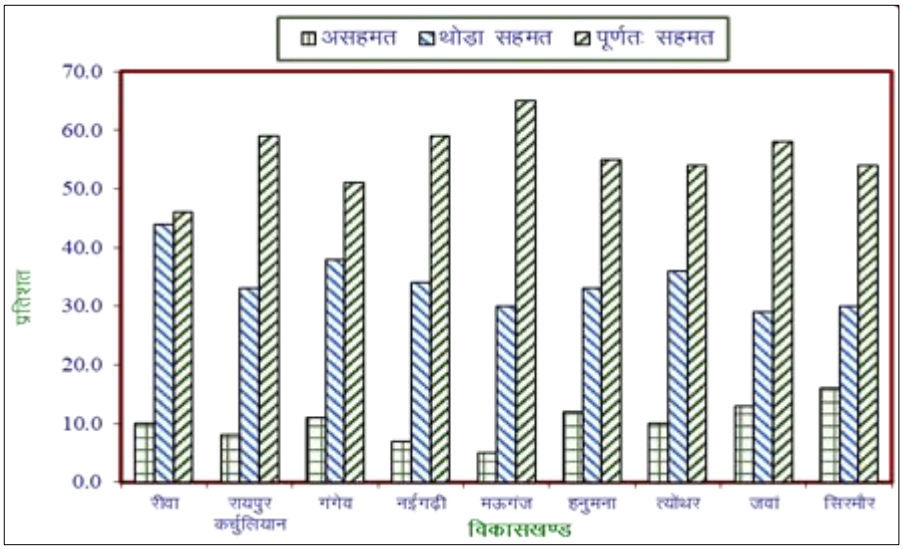

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति का आरेखीय निरूपण

विश्लेशण एवं व्याख्या –

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से न्यादर्श में चयनित सभी विकासखण्डों से 100–100 अर्थात कुल 900 महिलाओं से जिसमें सभी आयु वर्ग एवं सभी धर्म के लोग सम्मिलित है, आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 10.22 प्रतिशत लोग असहमत थे कि सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है। इसी संदर्भ में 34.11 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 55.67 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है।

शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें असहमत, थोड़ा सहमत और पूर्णतः सहमत का मध्यमान क्रमशः 10.2222, 34.1111 व 55.6667 है। जिसमें F अनुपात मान 222.1508 है। p का मान < .00001 है। $p < 0.05$ पर परिणाम सार्थक है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है। यह तथ्य परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

सारणी क्रमांक 2.1: शोध क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यो में समय की बचत का अध्ययन

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित महिलाओं की संख्या	वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है?					
			असहमत		थोड़ा सहमत		पूर्णतः सहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	100	6	6.00	24	24.00	70	70.00
2.	रायपुर कर्चुलियान	100	9	9.00	36	36.00	55	55.00
3.	गंगेव	100	10	10.00	37	37.00	53	53.00
4.	नईगढ़ी	100	8	8.00	44	44.00	48	48.00

5.	मऊगंज	100	5	5.00	40	40.00	55	55.00
6.	हनुमना	100	16	16.00	39	39.00	45	45.00
7.	त्योंथर	100	10	10.00	37	37.00	53	53.00
8.	जवां	100	14	14.00	28	28.00	58	58.00
9.	सिरमौर	100	16	16.00	27	27.00	57	57.00
योग		900	94	10.44	312	34.67	494	54.89
काई वर्ग (χ^2)		267.39						
'पी' मान		0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है						

स्वतंत्रता के अंष 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.991
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.210

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2.1 में शोध क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है, से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से न्यादर्श में चयनित सभी विकासखण्डों से 100–100 अर्थात कुल 900 महिलाओं से जिसमें सभी आयु वर्ग एवं सभी धर्म के लोग सम्मिलित है, आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 10.44 प्रतिशत लोग असहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है। इसी संदर्भ में 34.67 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 54.89 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है।

इसी प्रकार तीन समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 267.39 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं 2 स्वतंत्रता के अंश का मान क्रमशः 5.991 एवं 9.210 से अधिक है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है।

सारणी क्रमांक 2.2: शोध क्षेत्र में घरेलू कार्यो में समय की बचत का सदुपयोग राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं का अध्ययन

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित महिलाओं की संख्या	घरेलू कार्यो में समय की बचत का सदुपयोग राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं का पूरा करने में मे कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है।					
			असहमत		थोड़ा सहमत		पूर्णतः सहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	100	9	9.00	32	32.00	59	59.00
2.	रायपुर कर्चुलियान	100	12	12.00	36	36.00	52	52.00
3.	गंगेव	100	14	14.00	30	30.00	56	56.00
4.	नईगढ़ी	100	16	16.00	39	39.00	45	45.00
5.	मऊगंज	100	15	15.00	30	30.00	55	55.00
6.	हनुमना	100	16	16.00	39	39.00	45	45.00
7.	त्योंथर	100	10	10.00	37	37.00	53	53.00
8.	जवां	100	14	14.00	29	29.00	57	57.00
9.	सिरमौर	100	12	12.00	28	28.00	60	60.00
योग		900	118	13.11	300	33.33	482	53.56
काई वर्ग (χ^2)		220.83						
'पी' मान		0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है						

स्वतंत्रता के अंष 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.991
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.210

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2.2 में शोध क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से न्यादर्श में चयनित सभी विकासखण्डों से 100–100 अर्थात कुल 900 महिलाओं से जिसमें सभी आयु वर्ग एवं सभी धर्म के लोग सम्मिलित है, आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 13.11 प्रतिशत लोग असहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है। इसी संदर्भ में 33.33 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 53.56 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है।

इसी प्रकार तीन समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 220.83 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं 2 स्वतंत्रता के अंश का मान क्रमशः 5.991 एवं 9.210 से अधिक है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा

कम हो रही है। यह तथ्य परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष :

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें असहमत, थोड़ा सहमत और पूर्णतः सहमत का मध्यमान क्रमशः 10.2222, 34.1111 व 55.6667 है। जिसमें F अनुपात मान 222.1508 है। p का मान < .00001 है। $p < 0.05$ पर परिणाम सार्थक है। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं की आर्थिक सामाजिक प्रगति को विकसित कर रही है।
- शोध क्षेत्र में 10.44 प्रतिशत लोग असहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है। इसी संदर्भ में 34.67 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 54.89 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है।
- शोध क्षेत्र में 13.11 प्रतिशत लोग असहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है। इसी संदर्भ में 33.33 प्रतिशत लोग थोड़ा सहमत एवं 53.56 प्रतिशत पूर्णतः सहमत थे कि वैज्ञानिक उपकरणों एवं इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के प्रयोग से घरेलू कार्यों से समय बचा रही है और इसका सदुपयोग अब वे अपनी राजनैतिक, आर्थिक महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में कर रही है जिससे घरेलू हिंसा कम हो रही है।

संदर्भ :

1. आशारानी व्होरा (2005) – भारतीय समाज में स्त्री, नटराज प्रकाशन, दिल्ली पेज नं. 40..
2. आहूजा, राम, रावत प्रेम (2016) – सामाजिक समस्याए, महिला के विरुद्ध हिंसा, तृतीय संस्करण, रावत पब्लिकेशन, 222–234.
3. ममता (2010) – घरेलू हिंसा, अधिकारों के प्रति महिलाओं की जागरुकता, रिगल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 77–81.
4. जैन, मोहिनी एवं अर्सद मोहम्मद. महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, Shodhaytan, Multidisciplinary Academic Research. 2017:4(8).
5. शुक्ला, स्वाती (2012) – रीवा जिले में घरेलू हिंसा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन कौटिल्य शोध पत्रिका रीवा.
6. श्रीवास्तव, कामिनी (2010) – घरेलू हिंसा : कारण एवं सुझावः एक अध्ययन, संजय पब्लिकेसन्स (प्रा.लिमि.), गॉधी मार्ग, अहमदाबाद.
7. सिंह, रुचि एवं सिंह, डॉ. के.के. रीवा जिला में घरेलू महिला हिंसा में संचारक्रांति की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययनण International Journal of Advanced Academic Studies. 2022;4(1): 349-35.
8. सिंह, पूजा एवं सिंह, डॉ. के.के. रीवा जिला में घरेलू हिंसा से प्रभावित गृहणियों की मनोसामाजिक स्थितिः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Applied Research. 2022;8(3): 451-454.